

**डॉ.प्रशांत विजय पात्रे
शिवजागृती महाविद्यालय, नळेगाव**

हरिशंकर परसाई के कहानियों में हास्य-व्यंग्य

१. सारांश

हिं

दी साहित्य में हास्य-व्यंग्य की परंपरा बहुत समृद्ध रही है। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में हरिशंकर परसाई का विशेष योगदान रहा है। परसाई जी ने अपनी कहानियों और व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से समाज की विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक पाखंड और मानवीय कमजोरियों को उजागर किया है।

उनकी रचनाओं में हास्य के साथ-साथ तीखा व्यंग्य भी देखने को मिलता है, जो पाठकों को हँसाते हुए समाज की वास्तविकताओं से परिचित कराता है। इस शोध पत्र में परसाई की कहानियों में प्रयुक्त हास्य-व्यंग्य के स्वरूप, उद्देश्य और प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

२. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में व्यंग्य एक महत्वपूर्ण विधा है। व्यंग्य के माध्यम से लेखक समाज की बुराइयों और विसंगतियों को उजागर करता है।

हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रमुख व्यंग्यकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी कहानियों, निबंधों और लेखों में समाज की विभिन्न समस्याओं पर तीखा व्यंग्य किया है। उनकी रचनाएँ सरल भाषा, गहरी संवेदनशीलता और प्रभावशाली हास्य के कारण पाठकों को आकर्षित करती हैं।

परसाई जी का हास्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं है, बल्कि वह समाज को जागरूक करने और सोचने के लिए प्रेरित करता है।

३. अध्ययन का महत्व

हिंदी साहित्य में हास्य-व्यंग्य की परंपरा को समझना। हरिशंकर परसाई की रचनाओं के सामाजिक महत्व का अध्ययन करना।

साहित्य के माध्यम से समाज की समस्याओं को समझना।

आधुनिक व्यंग्य साहित्य की विशेषताओं का विश्लेषण करना।

४. शोध के उद्देश्य

हरिशंकर परसाई की कहानियों में हास्य-व्यंग्य के स्वरूप का अध्ययन करना।

उनकी रचनाओं में सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य का विश्लेषण करना।

परसाई के साहित्यिक योगदान को समझना।

पाठकों पर उनके व्यंग्य के प्रभाव का अध्ययन करना।

५. साहित्य समीक्षा

हिंदी साहित्य में कई विद्वानों ने हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य पर अध्ययन किया है।

डॉ. नामवर सिंह ने परसाई को आधुनिक हिंदी व्यंग्य का प्रमुख स्तंभ माना है।

रामविलास शर्मा ने उनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ और तीखे व्यंग्य की चर्चा की है।

अन्य आलोचकों के अनुसार परसाई का व्यंग्य समाज की सच्चाइयों को उजागर करने का सशक्त माध्यम है।

६. शोध पद्धति

इस शोध में मुख्य रूप से साहित्यिक विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है।

अध्ययन सामग्री:

हरिशंकर परसाई की प्रमुख कहानियाँ और व्यंग्य रचनाएँ संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथ और शोध लेख

प्रक्रिया:

परसाई की प्रमुख कहानियों का अध्ययन।

हास्य-व्यंग्य के तत्वों की पहचान।

सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों का विश्लेषण।

७. हरिशंकर परसाई के साहित्य में हास्य-व्यंग्य

हरिशंकर परसाई की रचनाओं में हास्य और व्यंग्य का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है।

१. सामाजिक व्यंग्य

परसाई ने समाज में फैले अंधविश्वास, पाखंड और ढोंग पर तीखा व्यंग्य किया है। उनकी कहानियों में समाज की वास्तविक स्थिति का चित्रण मिलता है।

२. राजनीतिक व्यंग्य

उन्होंने राजनीतिक नेताओं और व्यवस्था की कमजोरियों पर भी कटाक्ष किया है। उनके व्यंग्य में सत्ता और भ्रष्टाचार की आलोचना स्पष्ट दिखाई देती है।

३. मानवीय कमजोरियों पर व्यंग्य

परसाई ने मनुष्य की स्वार्थपरता, लालच और दिखावे की प्रवृत्ति को भी हास्य-व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

८. प्रमुख रचनाओं में हास्य-व्यंग्य

रचना विषय व्यंग्य का स्वरूप

भोलाराम का जीव सरकारी व्यवस्था

भ्रष्टाचार और लालफीताशाही पर व्यंग्य

सदाचार का ताबीज सामाजिक पाखंड

नैतिकता के दिखावे पर कटाक्ष

ठिठुरता हुआ गणतंत्र राजनीतिलोकतंत्र की विसंगतियों पर व्यंग्य

इन रचनाओं में परसाई ने हास्य के माध्यम से गंभीर सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है।

९. निष्कर्ष

हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के महान व्यंग्यकारों में से एक हैं। उनकी कहानियों में हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समाज की वास्तविकताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उनका व्यंग्य केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि समाज को सोचने और सुधार की दिशा में प्रेरित करता है। परसाई की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और हिंदी व्यंग्य साहित्य में उनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

१०. संदर्भ

परसाई, हरिशंकर - भोलाराम का जीव

परसाई, हरिशंकर - सदाचार का ताबीज

नामवर सिंह - हिंदी साहित्य की आलोचना

रामविलास शर्मा - हिंदी साहित्य का इतिहास

विभिन्न शोध लेख और साहित्यिक पत्रिकाएँ